comulative record card

by Priyanka Bhagat

निर्देशन कार्य के लिए आवश्यक छात्र से संबंधित समस्त सूचनाएं संचई अभिलेख पत्र से उपलब्ध होती है निर्देशन में छात्र की समस्या से समाधान के पूर्व छात्र को समझना आवश्यक है और मेरा इसलिए छात्र का अध्ययन अनिवार्य है और इस कार्य के लिए विविध प्रवृत्तियों और तकनीक का प्रयोग होता है। अन्य विधियों द्वारा संकलित तथ्यों तथा सूचनाओं को एक स्थान पर रखना संचई अभिलेख कहलाता है आज इस कार्य पुस्तक में यह सूचना संचित की जाती है उसे संचई अभिलेख पत्र कहते हैं। सन 1928 में अमेरिकन काउंसिल ऑफ एजुकेशन द्वारा सर्वप्रथम संचई अभिलेख पत्र का प्रारूप तैयार किया गया।

परिभाषा(definition):-

डब्ल्यूसीएल इनके अनुसार -संचई अभिलेख पत्र की परिभाषा मियां कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी अभिलेख है जिसमें एक छात्र की मूल्यांकन संबंधी सूचनाएं एक कार्ड पर लिखी होती है और प्रायःएक स्थान

मुरे थॉमस के अनुसार -आलेख पत्र किसी समूह के बारे में लंबी अवधि में एकत्रित की गई सूचना होती है।
बोनीया के अनुसार -संचई अभिलेख पत्र में किसी छात्र से संबंधित विषय भी तथ्य निहित होते हैं जिनका संकलन करना विद्यालय महत्वपूर्ण मानता है और वर्ष प्रतिवर्ष इन तथ्यों को व्यवस्थित रूप से सुरक्षित रखता है।

उपरोक्त परिभाषा उसे स्पष्ट है कि संचई अभिलेख पत्र में किसी भी छात्र के जीवन से संबंधित तथ्यों तथा सूचनाओं का समावेश होता है। संचई अभिलेख पत्रक छात्र के प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेने के बाद रखना प्रारंभ हो जाता है।

संचई अभिलेख पत्र का महत्व एवं प्रयोजन(importance and purpose of comulative record card):_

संचालित पत्र छात्र जीवन के गुणों एवं क्रियाओं का ऐतिहासिक पत्र में इसके द्वारा निम्न प्रयोजनों की पूर्ति होती है:-

- किसी छात्र की मानसिक क्षमताओं तथा उपलब्धियों की पूरी जानकारी प्राप्त कर
- अध्यापकों का किसी ने छात्र के बारे में शीघ्रता से जान लेना। इसी कारण छात्र के विद्यालय छोड़ने तथा नवीन विद्यालय में प्रवेश के साथ संचई अभिलेख पत्र का भी स्थानांतरण होता है
- छात्र के व्यक्ति एवं सामाजिक समायोजन की समस्याओं से अवगत

- माता-पिता से मिलने तथा जानकारी प्राप्त करने में सुविधा का होना
- छात्रों के बारे में वे सूचनाएं प्राप्त करना जो बहुधा परीक्षाओं से प्राप्त नहीं होता है
- यह निदानात्मक पूर्व कथन आत्मक एवं उपचारात्मक क्रियाओं में सहायक होता है
- समस्यात्मक बालकों के कारणों को जानने में सहायक होता है

संचई अभिलेख पत्रों की विषय वस्तु(subject matter of comulative record card):-

- व्यक्तिगत परिचय- नाम ,जन्म तिथि ,जन्म स्थान ,निवास स्थान ,जाति ,प्रवेश तिथि ,प्रवेश संख्या आदि
- परिवार- माता पिता का नाम, जीवित या मृत ,व्यवसाय , वार्षिक आय, निजी मकान या किराए का ,माता-पिता की वैवाहिक संबंध, भाषा ,धर्म, भाई बहनों की संख्या ,भाई बहनों में क्रम आदि
- स्वास्थ्य -बालक की ऊंचाई ,भार ,सीने का माप, दातों की स्थिति ,शारीरिक दोष, गंभीर रोग ,वंश परंपरागत रोग
- उपस्थिति- विद्यालय में उपस्थिति की संख्या, लंबी अनुपस्थिति का कारण

- योग्यता ,रुचियां वह व्यक्तित्व संबंधी गुण -मानसिक व विशिष्ट योग्यता, व्यक्तित्व संबंधी गुण -जैसे इमानदारी ,विनय शीलता, सामाजिकता ,आत्मविश्वास ,नेतृत्व , सहयोग आदि.
- शैक्षिक कार्य- परीक्षाओं में विषयों के प्राप्तांक, अधिगम हस्तकार्य कौशल ,कक्षा में स्थान ,अ।सफलता का कारण।
- जीविका संबंधी योजना
- पाठ्य सहगामी क्रियाएं -खेलकूद ,सांस्कृतिक व साहित्यिक क्रियाएं जिनमें छात्र भाग लेता है

संचई अभिलेख पत्र निर्माण में ध्यान रखने योग्य बिंदु-

- संचई अभिलेख पत्र की रूपरेखा विद्यालय के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
- विषय वस्तु ऐसी व्यवस्थित रूप में हो जो बालक की क्रमिक प्रगति को स्पष्ट करें।
- अभिलेख पत्र की रूपरेखा तैयार करने में सभी शिक्षकों का सहयोग होना चाहिए
- रूपरेखा ऐसी हो कि लेखन और पढ़ने में कठिनाई अनुभव ना हो।
- अभिलेख पत्र में तथ्यों को लिखने की एक नियमावली होनी चाहिए।
- इसका स्वरूप में लचीलापन होना चाहिए ।
- अभिलेख पत्र सुरक्षित स्थान पर रखे जाने चाहिए तथा प्रत्येक को